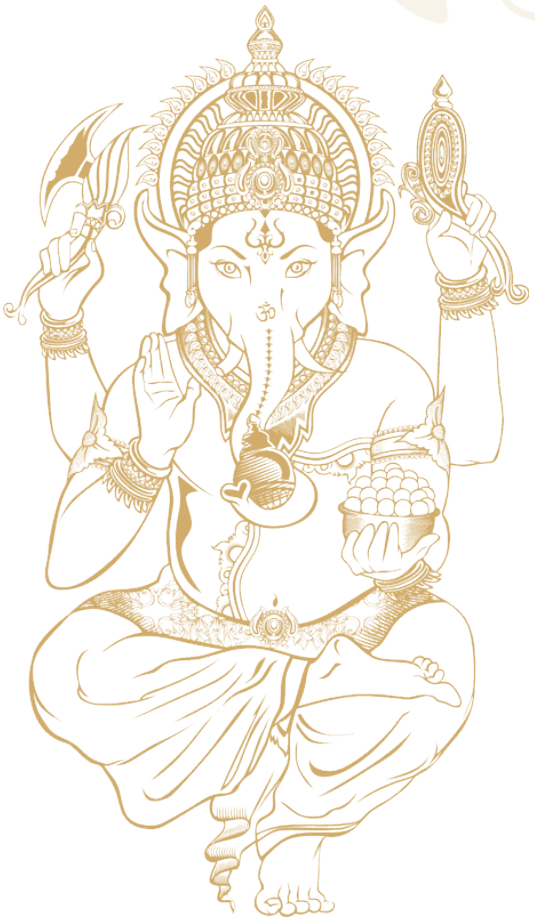

????

08 Mar 2026

10:07 PM

Pune

Model: Baby-Horoscope **Order No: 121539801**

तिथि 08/03/2026 **समय** 22:07:00 **वार** रविवार **स्थान** Pune **चित्रपक्षीय अयनांश** : 24:13:29
अक्षांश 18:34:00 उत्तर **रेखांश** 73:58:00 पूर्व **मध्य रेखांश** 82:30:00 पूर्व **स्थानिक संस्कार** -00:34:08 घंटे

पंचांग

साम्पातिक काल	08:38:27 घं
वेलान्तर	00:10:48 घं
सूर्योदय	06:48:20 घं
सूर्यास्त	18:41:49 घं
चैत्रादि संवत	2082
शक संवत	1947
मास	चैत्र
पक्ष	कृष्ण
तिथि	6
नक्षत्र	विशाखा
योग	व्याघात
करण	गर

अवकहड़ा चक्र

गण	राक्षस
योनि	व्याघ्र
नाड़ी	अन्त्य
वर्ण	शूद्र
वश्य	मानव
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	वायु
जन्म नामाक्षर	तू-तुष्टि
पाया(रा.-न.)	स्वर्ण-ताम्र
होरा	शुक्र
चौघड़िया	चर

विंशोत्तरी

गुरु 10वर्ष 9मा 26दि

गुरु

08/03/2026
03/01/2037

	00/00/0000
	08/03/2026
बुध	10/12/2027
केतु	15/11/2028
शुक्र	17/07/2031
सूर्य	04/05/2032
चन्द्र	03/09/2033
मंगल	10/08/2034
राहु	03/01/2037

योगिनी

धान्या 2वर्ष 0मा 10दि

धान्या

08/03/2026
19/03/2028

	00/00/0000
	08/03/2026
भद्रिका	19/03/2026
उल्का	18/09/2026
सिद्धा	19/04/2027
संकटा	18/12/2027
मंगला	18/01/2028
पिंगला	19/03/2028

ग्रह	व	अ	अंश	राशि	नक्षत्र	पद	स्वामी	अं.	स्थिति	षट्बल	चर	स्थिर	ग्रह तारा
लग्न			12:57:48	तुला	स्वाति	2	राहु	बुध	---	0:00			
सूर्य			23:53:14	कुंभ	पू०भाद्रपद	2	गुरु	शनि	शत्रु राशि	1.20	अमात्य	पितृ	जन्म
चंद्र			24:18:51	तुला	विशाखा	2	गुरु	बुध	सम राशि	1.46	आत्मा	मातृ	जन्म
मंगल		अ	10:34:48	कुंभ	शतभिषा	2	राहु	शनि	सम राशि	1.05	पुत्र	भ्रातृ	अतिमित्र
बुध	व	अ	21:24:18	कुंभ	पू०भाद्रपद	1	गुरु	गुरु	सम राशि	1.04	भ्रातृ	ज्ञाति	जन्म
गुरु	व		20:52:21	मिथु	पुनर्वसु	1	गुरु	गुरु	शत्रु राशि	1.10	मातृ	धन	जन्म
शुक्र			08:34:00	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	उच्च राशि	1.47	ज्ञाति	कलत्र	सम्पत
शनि			08:25:42	मीन	उ०भाद्रपद	2	शनि	शुक्र	सम राशि	1.04	कलत्र	आयु	सम्पत
राहु	व		14:41:39	कुंभ	शतभिषा	3	राहु	केतु	मित्र राशि		---	ज्ञान	अतिमित्र
केतु	व		14:41:39	सिंह	पू०फाल्गुनी	1	शुक्र	शुक्र	शत्रु राशि		---	मोक्ष	प्रत्यारि

लग्न-चलित

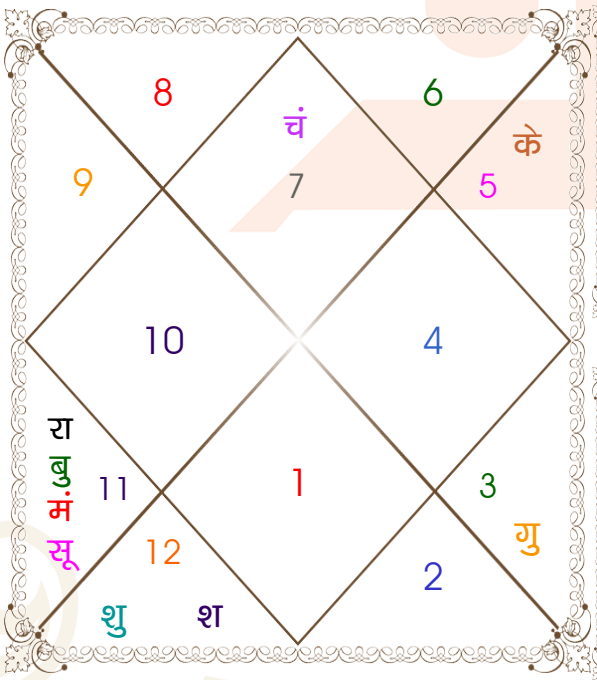

चन्द्र कुंडली

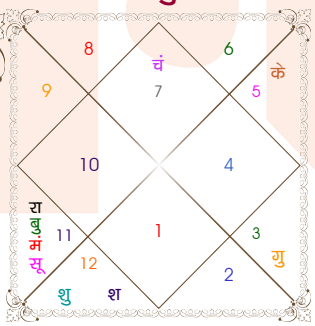

नवमांश कुंडली

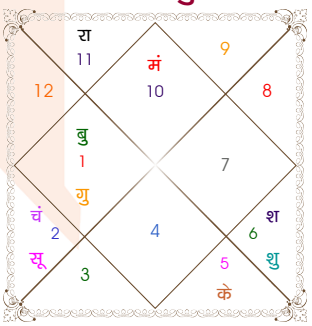

सर्वाष्टकवर्ग

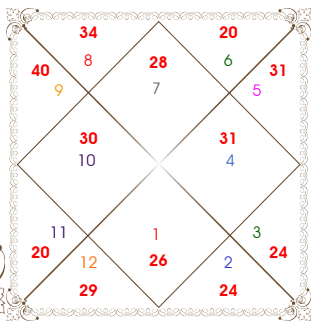

दशमांश कुंडली

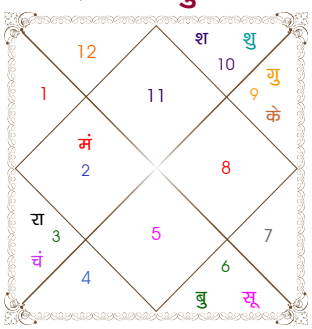

नक्षत्रफल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि तुला तथा राशि स्वामी शुक्र होगा। नक्षत्रानुसार आपकी नाड़ी अन्त्य, वर्ग सर्प, वर्ण शूद्र, गण राक्षस तथा योनि व्याघ्र होगी। नक्षत्र के अनुसार आपका जन्म नाम का प्रथमाक्षर "तु" या "तू" से प्रारम्भ होगा।

आप अपने पति पर हमेशा पूर्ण रूप से नियंत्रण करने में सफलता प्राप्त करेंगी। वे आपकी आज्ञा या सलाह के बिना कोई भी सांसारिक कार्यकलापों को सम्पन्न नही कर सकेंगे। इस प्रकार वे पूर्ण रूप से आपके वश में रहेंगे। आप छोटी छोटी वस्तुओं पर अभिमान का प्रदर्शन करेंगी जिससे समाज में आपके सम्मान में न्यूनता आएगी। आपकी सभी शत्रु आपसे पराजित दौरान आपकी- विरोध में किसी भी प्रकार का स्वर उठाने का साहस उनके अन्दर विद्यमान नही रहेगा।

गर्वी दारवशो जितारिरधिक क्रोधी विशाखोद्भवः।
जातक परिजातः

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक घमंड, हमेशा अपनी पत्नी के वश में रहने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला तथा अत्यधिक क्रोधी स्वभाव का होता है।

आप कभी कभी अन्य सामाजिक जनों से अनावय्क रूप से ईर्ष्या तथा द्वेष का भाव रखेंगी। यदि कोई आपसे अच्छा काम करेगा या कोई उपलब्धि पाएगा तो आप उससे द्वेष करने लगेगी। दूसरों की वस्तुओं को देखकर आप कभी कभी अत्यन्त ही दीनता का प्रदर्शन करेंगी तथा उनके प्रति लोलूपता का भाव रखेंगी। आपका शरीर सुन्दर कान्तिमय होगा जिससे सभी लोग आपके स्वरूप से आकर्षित रहेंगे। बोलने में आप अत्यन्त ही प्रवीण होंगी तथा इसी वाक्पटुता के कारण अपने अधिकांश कार्यों को सफल बनाने में समर्थ होंगी।

ईर्ष्युर्लुब्धोः द्युतिमान्वचनपटुः कलहकृद्विशाखासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक ईर्ष्या तथा द्वेष करने वाला, लोभी, कान्तियुक्त, वाक्चतुर तथा कलहप्रिय होता है।

आपके मन में धर्म के प्रति श्रद्धा तथा निष्ठा का भाव विद्यमान रहेगा तथा देवताओं के प्रसन्न करने के लिए आप नित्य हवनादि धार्मिक कृत्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगी। साथ ही आपके सच्चे मित्र भी अल्प ही रहेंगे जो समय पर आपना सहयोग प्रदान करेंगे।

सदानुरक्तोग्निसुरक्रियायां धातुक्रियायामपि चोग्रसोम्यः।
यस्य प्रसूतौ च भवेद्विशाखा सखा न कस्यापि भवेन्मनुष्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक देवादि पूजन के निमित हवनादि कार्यों में रत रहने वाला, धातुक्रिया में कभी उग्र तो कभी सौम्यता का प्रदर्शन करने वाला तथा किसी का भी मित्र नहीं होता है।

आपके हृदय में तथा दया एवं करूणा के भाव की न्यनता रहेगी। अन्य लोगों से समय समय पर आपके वाद विवाद तथा कलह सामान्य रूप से होते रहेंगे तथा अन्यजनों पुरूषवर्ग से भी आपके मित्रतापूर्ण घनिष्ठ संबंध रहेंगे।

अतिलुब्धोडतिमानी च निष्ठुरः कलहप्रियः।
विशाखायां नरो जातः वैश्याजन रतो भवेत।।
मानसागरी

अर्थात विशाखा नक्षत्र में उत्पन्न जातक अति लोभी, घमंडी, निष्ठुर, झगड़ा करने वाला तथा अन्य स्त्रियों से संबंध रखने वाला होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्णपाद में उत्पन्न जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता है। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनों से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती है। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्यधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती है चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक सौन्दर्य दर्शनीय एवं आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव की महिला होंगी तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दया का भाव विद्यमान रहेगा। जीवन में सर्वप्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप हमेशा सुसम्पन्न रहेंगी तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग करेंगी। साथ ही विविध प्रकार के ऐश्वर्य एवं वैभव से भी आप युक्त रहेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा।आप एक चतुर तथा बुद्धिमता महिला होंगी तथा अपने समस्त कार्यों को चतुराई तथा बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। साथ ही विभिन्न प्रकार के सद्गुणों से भी आप सुशोभित रहेंगी।

तुला राशि में पैदा होने के कारण आपका शरीर तथा मुखमंडल सुन्दर रहेगा। आपकी नासिका उन्नत तथा नेत्र विशाल हुए होंगे। विभिन्अ आपके आप सुशोभित रहेंगी तथा जीवन में इनका उपभोग करेंगी। आप वाहन तथा जायदाद आदि से भी बलवती होकर इनसे पूर्ण मात्रा में धनार्जन करेंगी। आप एक पराक्रमी महिला होंगी तथा समाज में अधिकांश लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपको उचित आदर भी प्रदान करेंगे। आप हमेशा धन तथा वैभव से सुसम्पन्न रहेंगी इनका आपके पास तनिक भी अभाव नही रहेगा। पति को आप पूर्ण रूप से अपने वश में रखेंगी तथा सभी सांसारिक कार्य आपकी ही सहमति से सम्पन्न होंगे। नाना प्रकार के कार्यों की आप ज्ञाता होंगी तथा दक्षता से इन्हे पूर्ण करेंगी। आप ब्राहमण तथा देवताओं के प्रति पूर्ण श्रद्धा अपने मन में रखेंगी। धन धान्यादि को संग्रह करने की प्रवृति से भी आप युक्त रहेंगी तथा यत्नपूर्वक इनका संग्रह करेंगी। इसके साथ ही बन्धु वर्ग के भलाई के

कार्यों को भी आप यत्नपूर्वक करती रहेंगी।

उन्नासो व्यायताक्षः कृशवदनतनुर्भूरिदारो वृषाढ्यो।
गो भूम्यः शौचकरो वृषसमवृषणो विक्रमज्ञः क्रियेशः।।
भक्तो देवद्विजानां बहुविभवयुतः स्त्रीजितो हीनदेहो।
धान्यादानैकबुद्धिस्तुलिनि शशधरे बन्धुवर्गोपकारी।।
सारावली

आप ब्राहमण देवता तथा साधु सज्जनों की सेवा करने में हमेशा तत्पर रहेंगी। नाना प्रकार के शास्त्रों का ज्ञान प्राप्त करके आप एक श्रेष्ठ विदूषी होंगी तथा शुद्धतापूर्ण जीवन व्यतीत करेंगी। आपका शरीर सुवासित रहेगा तथा शरीर के अन्य रहेंगे। घूमने तथा यात्राओं के प्रति आप अत्याधिक रूचिशील होंगी एवं अपने अधिकांश समय भ्रमण तथा यात्राओं में ही व्यतीत करेंगी। क्रय विक्रयादि करने में आप दक्ष रहेंगी। अपने समीपस्थ संबंधियों तथा बन्धु वर्ग को आप पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी परन्तु बाद में इन्ही लोगों के द्वारा आपको उपेक्षित भी होना पड़ेगा।

देवब्राहमणसाधुपूजनरतः प्राज्ञः शुचिः स्त्रीजितः।
प्रांशुश्चोन्नतनासिका कृशचलदगात्रो डटनोडर्थान्वितः।।
हीनाङ्गः क्रयविक्रयेषु कुशलो देवद्विनामा सरूक्।
बन्धूनामुपकारकृद्वि रूषतस्त्यक्तस्तु तैः सप्तमे।।
बृहज्जातकम्

आप में धैर्य की प्रधानता रहेगी तथा समस्त कार्यकलापो को धैर्यपूर्वक सम्पन्न करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेगी। आप न्याय प्रिय रहेगी तथा हमेशा निष्पक्ष रूप से न्याय का समर्थन करेंगी आपकी इसी प्रकृति को देखते हुए अन्य सामाजिक जन अपने विवादों के समाधान के लिए आपको मध्यस्थ या पंच नियुक्त करेंगे। आपकी पुत्र सन्तति अल्प अल्प सख्यां में रहेंगी तथा भाग्योदय भी काफी देर से होगा।

चलत्कृशाङ्गो डुतोडतभक्तो देवद्विजानामटनोद्विनामा।
प्रांशुश्च दक्षः क्रयविक्रयेषु धीरो डदयस्तौलिनि मध्यवादी।।
फलदीपिका

आप शारीरिक कद से मध्यम रहेंगी अर्थात् अधिक लम्बी होंगी न ठिगनी। राज्य के उच्चाधिकार प्राप्त वर्ग को खुश करने में कला में आप अत्यन्त ही दक्ष होंगी तथा उनसे पूर्ण सहयोग एवं सम्मान को प्राप्त करेंगी अतः आपके महत्वपूर्ण कार्य व्यवधान रहित सम्पन्न होंगे। लेकिन आप कभी अत्याधिक मात्रा में बोलेंगी। इससे अन्य जन आपसे अप्रसन्न रहेंगे। साथ ही आप ग्रहनक्षत्र के ज्ञान को प्रतिपादित शास्त्र या ज्योतिष की भी एक अच्छी विदुषी होंगी। इसके अतिरिक्त भाइयों तथा सेवकों के प्रति आप नित्य अनुराग की भावना रखेंगी।

भवति शिथिलगात्रो नातिदीर्घो न खर्वी।
जनपति परितोषी बान्धवेभ्यः प्रदाता।।

अतिशय बहुभाषी ज्योतिषां ज्ञान युक्तो।
भवति सः तुलाराशि बन्धुभृत्यानुरागी।।
जातक दीपिका

कभी कभी आप अनुचित अवसर पर अपने क्रोध को प्रकट करेंगी। इससे आप दुःखी भी होंगी एवं अतिरिक्त परेशानियों का भी सामना करेंगी। आप अत्यन्त ही प्रिय एवं मधुर वाणी का अपनी भाषा में उपयोग करेंगी। आप दीन दुःखियों के प्रति भी दयालु रहेंगी तथा यथा शक्ति उनकी सहायता करने के लिए सदैव तत्पर रहेंगी। आपके नेत्रों में भी चंचलता का बाहुल्य रहेगा आपके पास विषम धनागमन रहेगा जिससे आर्थिक स्थिति भी सामान्यतया विषम रहेगी। आप घर के अन्दर स्वयं को बलवती सऊझेंगी परन्तु घर से बाहर अत्यन्त ही निर्बलता का अहसास करेंगी। मित्रवर्ग में आप प्रिय एवं आदरणीय रहेंगी तथा विदेश में भी निवास करेंगी।

अस्थानरोषणो दुःखी मृदुभाषी कृपान्वितः।
चलाक्षश्चललक्ष्मीको गृहमध्येळति विक्रमः।।
वाणिज्य दक्षो देवानां पूजको मित्रवत्सलः।
प्रवासी सुहृदयमिष्टस्तुला जातो भवेन्नरः।।
मानसागरी

नाना प्रकार के उत्तम वाहनों से आप सर्वदा युक्त रहकर जीवन में अपना सुखपूर्वक उपभोग करेंगी। आप स्वभाव से ही दानी होंगी तथा समयानुसार इस प्रवृति का समाज में प्रदर्शन करती रहेगी। आप अपने प्रिय की अत्यन्त ही प्रेमी रहेंगी। साथ धन वैभव से भी आप युक्त रहकर उसका सुखपूर्वक उपभोग करेंगी।

वृषतुरंग विक्रमविक्रमनद्विजसुरार्चनदानमना पुभान्।
शशिनि तौलिगते बहुदारभाग्विभवसंभव संचित विक्रमः।।
जातकाभरणम्

राक्षस गण में पैदा होने के कारण आप अधिक तथा व्यर्थ बोलने वाली प्रवृति की महिला होंगी। आपका मन मे दया भाव की अल्पता रहेगी। साहस से आप सदैव परिपूर्ण रहेंगी। तथा साहसिक कार्यों को करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके अधिकांश कार्य प्रवृति से सम्पन्न होंगे। आप अकारण शीघ्र ही क्रोधित भी हो जाया करेंगी। आपका शारीरिक स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा बल का आप में अभाव नही होगा। कभी कभी अन्य जनों से विवाद भी होता रहेगा। अतः सामाजिक जनों से प्रेम तथा विनम्रता पूर्वक व्यवहार करना चहिए।

आप जीवन में कभी कभी उन्माद तथा प्रमेह रोग से भी व्याकुल रह सकती हैं। आपका शारीरिक स्वरूप सुन्द होगा तथा कठोर वाणी का भी कभी कभी आप प्रयोग करेंगी जिससे लोग आपसे अप्रसन्न रहेंगे। अतः अपने सम्भाषण में यत्नपूर्वक मधुर शब्दो का ही प्रयोग करें।

अनल्पजल्पश्च कठोरचित्तः स्यात्साहसी कोधपरोद्धतश्च।
दुःशीलवृतः कलीकृत्वलीमान रक्षोगणोत्पन्नरो विरोधी।।

अर्थात् राक्षस गण में उत्पन्न जातक व्यर्थ बोलने वाला, कठोर, साहसी, अकारण ही क्रोधित होने वाला, नीच प्रकृति से युक्त, झगड़ू, बलवान तथा अन्य लोगों का विरोधी होता है।

व्याघ्र योनि में उत्पन्न होने के कारण आप स्वछन्दता प्रिय रहेंगी तथा अपने अधिकांश कार्यों को बिना किसी हस्तक्षेप के करना पसन्द करेंगी। धनधान्यार्जन करने में आप तत्पर रहेंगी तथा संग्रह करने के प्रति भी विशेष सतर्क रहेंगी। अच्छी बातों को आप शीघ्र ही ग्रहण करने के लिए सदैव उत्सुक रहेंगी। अपने कार्य क्षेत्र में आप एक प्रभावी महिला रहेंगी तथा सभी लोग आपको उचित मान सम्मान प्रदान करेंगे क्यो कि आप इस कार्य में विशेष ज्ञाता प्राप्त रहेंगी। वैभव तथा ऐश्वर्य से भी आप सर्वदा सुसम्पन्न रहेंगी परन्तु आप अपनी प्रशंसा स्वयं ही अपने मुहं से करने वाली होंगी अतः इससे आपके प्रभाव में न्यूनता आएगी।

स्वच्छन्दोऽर्थरतो ग्राही दीक्षावान सः विभुः सदा।
आत्मस्तुतिपरो नित्यं व्याघ्रयोनि भवो नरः।।
मानसागरी

अर्थात् व्याघ्र योनि में उत्पन्न जातक स्वतंत्र प्रवृति वाला, अर्थसंग्रह में तत्पर, गुणों को ग्रहण करने वाला, दीक्षित, वैभव युक्त तथा अपने ही मुख से स्वयं अपनी प्रशंसा करने वाला होता है।

आप के जन्म समय में चन्द्रमा लग्न में विद्यमान हैं। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से उन्हें लम्बी आयु की प्राप्ति होगी। आपके जन्म के उपरान्त वे धन सम्पत्ति को भी प्राप्त करने में सफल होगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह एवं वात्सल्य रहेगा तथा जीवन के सभी शुभ एवं महत्व पूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी। इसके साथ ही आप के परस्पर संबंध मधुर रहेंगे एवं मतभेदों की प्रायः अल्पता ही रहेगी।

आप भी उनके प्रति मन में पूर्ण सम्मान तथा आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा पालन करने के लिए प्रायः तत्पर रहेंगी। इससे आप लोगों का एक दूसरे के प्रति विश्वास आदि में वृद्धि होगी जिससे आजीवन मधुर संबंध बने रहेंगे। इससे आप परस्पर सहयोग भाव से जीवन में प्रसन्नता की प्राप्ति करेंगी।

आपके जन्म समय में सूर्य पंचम भाव में स्थित है अतः पिता की आप प्रिय रहेंगी उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा किंचित शारीरिक कष्टानुभूति प्राप्त करते रहेंगे। धनैश्वर्य का उनके पास अभाव नहीं रहेगा एवं जीवन में आपको समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने के लिए अपना अमूल्य सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपको वे वांछित आर्थिक सहयोग भी देते रहेंगे जिससे आप को कोई भी कष्ट न हो।

आप भी उनके प्रति पूर्ण आदर का भाव रखेंगी तथा उनकी आज्ञा का पालन करने

के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगी। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा आप के मध्य आपसी मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में तनिक तनाव तथा कटुता उत्पन्न होगी लेकिन कुछ समय के उपरान्त सब कुछ स्वतः ही ठीक हो जाएगा। इसके अतिरिक्त आप उनकी सुखसुविधा का पूर्ण ध्यान रखेंगी तथा आवश्यकतानुसार उन्हें आर्थिक या अन्य रूप से अपना सहयोग प्रदान करेंगी।

आपके जन्म समय में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः भाई बहिनों का आप मध्यम रूप से सुख प्राप्त करेंगी। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा परन्तु कभी कभी शारीरिक अस्वस्थता भी रहेगी। धन सम्पत्ति से वे युक्त रहेंगे। जीवन में वे आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण क्षेत्रों में अपना योगदान प्रदान करेंगे तथा सुख दुःख में आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता देंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यो में भी आप उनका वांछित सहयोग प्राप्त करेंगी।

आपके हृदय में भी उनके प्रति पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपसी संबंध भी प्रायः मधुर ही रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी सैद्धान्तिक मतभेदों से संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होंगे परन्तु कुछ समय बाद सब कुछ स्वतः ही सामान्य हो जाएगा। आप सुख दुःख में हमेशा उनका सहयोग करेंगी एवं अपनी ओर से कभी भी उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगी। इसके अतिरिक्त अवसरानुकूल आप उन्हें आर्थिक सहायता भी प्रदान करेंगी। इस प्रकार आप मध्यम रूप से एक दूसरे का सुख प्राप्त करेंगे।

आपके लिए माघ मास, चतुर्थी, नवमी, चतुर्दशी तिथियां, शतमिषा नक्षत्र, शुक्ल योग, तैतिल करण, गुरूवार, चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अनिष्ट फल कारक होंगे। अतः आप 15 जनवरी से 14 फरवरी के मध्य 4,9,14 तिथियों, शतमिषा नक्षत्र शुक्ल योग तथा तैतिल करण में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवग्रहनिर्माण, क्रय विक्रयादि अन्य महत्वपूर्ण कार्यो को सम्पन्न न करे। अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही गुरूवार चतुर्थ प्रहर तथा मीन राशि के चन्द्रमा को भी शुभकार्यों में व्याज्य ही रखें। इन दिनों तथा समय में शारीरिक स्वास्थ्य एवं सुरक्षा के प्रति भी विशेष ध्यान देना चाहिए।

यदि आपके लिए समय अच्छा नहीं चल रहा हो मानसिक परेशानी, शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधाएं तथा अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपनी इष्ट देवी लक्ष्मी जी की उपासना करनी चाहिए तथा श्रद्धापूर्वक शुक्रवार के उपवास भी करने चाहिए। साथ ही हीरा, सोना, श्वेत वस्त्र, श्वेत चन्दन, चावल, दूध इत्यादि पदार्थो का श्रद्धा से किसी सुपात्र को दान करना चाहिए इससे आपके अशुभ फल न्यून होंगे तथा मन को भी शान्ति प्राप्त होगी। इसके अतिरिक्त शुक्र के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 20000 जप सम्पन्न करवाने चाहिए।

ॐ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः।
मंत्र- ॐ ह्रीं श्रीं शुकाय नमः।